Faizane Hazrate Abdullah Bin Zubair رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 226
Weekly Booklet : 226

फ़ैज़ाने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا

सफ़ह़ात 20

जन्नतुल मअ़ला, मक्का शरीफ़

पहला मुहाजिर बच्चा 01
रिज़्क़ में बरकत और ग़म दूर करने का वज़ीफ़ा 07
छत से सांप गिर पड़ा 05
शहादत का वाक़िआ 16

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افۡتَحۡ عَلَیۡنَا حِکۡمَتَکَ وَانۡشُرۡ
عَلَیۡنَا رَحۡمَتَکَ یَا ذَاالۡجَلَالِ وَالۡاِکۡرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسۡتَطۡرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **फ़ैज़ाने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर** رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا
सिने त़बाअ़त : जुमादिल ऊला **1443** हि., दिसम्बर **2021** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**फ़ैज़ाने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर** رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا" मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद -1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

फ़ैज़ाने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **: अल्लाह** पाक की ख़ातिर आपस में महब्बत रखने वाले जब आपस में मिलें और हाथ मिलाएं और नबी (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। (مسند ابو یعلی، 3/95، حدیث:2951)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

पहला मुहाजिर बच्चा

अल्लाह पाक के रह़मत वाले प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब मक्कए पाक से हिजरत फ़रमा कर मदीनए पाक तशरीफ़ लाए तो शव्वालुल मुकर्रम के पुर बहार महीने में मुहाजिरीन सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के हां मक़ामे क़ुबा पर एक प्यारे से बच्चे की विलादत हुई, बच्चे की वालिदए मोह़तरमा ने बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर अपने चांद जैसे शहज़ादे को रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक गोद में डाल दिया, **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खजूर मंगवाई और उसे अपने मुबारक मुंह से चबा कर बच्चे के मुंह में डाल दिया, यूं उस ख़ुश नसीब बच्चे के पेट में सब से पहले जो बा बरकत ग़िज़ा गई वोह दो जहां के सरदार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक लुआ़ब शरीफ़ और खजूर थी। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन पर अपना मुबारक

हाथ फेरा और बच्चे के लिये दुआ़ए बरकत फ़रमाई, येह ख़ुश नसीब बच्चा मदीनए पाक में मुसल्मानों में पैदा होने वाला पहला बच्चा था जिस की पैदाइश से सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को बहुत ज़ियादा ख़ुशी हुई क्यूं कि यहूदी कहा करते थे कि हम ने मुसल्मानों पर जादू कर दिया है, इन के हां औलाद नहीं होगी। एक और रिवायत में है कि जब मुहाजिरीन सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان मदीनए पाक तशरीफ़ ला कर यहां रहने लगे और उन के हां औलाद न हुई तो यहूदी बोले : हम ने इन पर जादू कर दिया है यहां तक कि लोगों में येह बात मश्हूर हो गई तो सब से पहले ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا की विलादत हुई इन की विलादत पर सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने इतनी ज़ोर से ना'रए तक्बीर लगाया कि पूरा मदीना **अल्लाहु अक्बर** के ना'रे से गूंज उठा, **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ (जो उस बच्चे के नानाजान थे) को हुक्म इर्शाद फ़रमाया कि इन के कान में अज़ान दो और फिर ख़ुद इस सआ़दत मन्द बच्चे का नाम अ़ब्दुल्लाह रखा। (زرقانی علی المواہب، 2/356، سیر اعلام النبلاء، 4/461، مستدرک، 4/709، حدیث:6386)

मैं ख़ुद नाम रखूंगा

तिरमिज़ी शरीफ़ में है : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के घर में चराग़ देखा तो ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से इर्शाद फ़रमाया : लगता है कि अस्मा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا) के घर विलादत हुई है लिहाज़ा तुम उस बच्चे का नाम न रखना, मैं ख़ुद उस का नाम रखूंगा। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का नाम अ़ब्दुल्लाह रखा और अपने मुबारक हाथों से घुट्टी अ़ता फ़रमाई। (ترمذی، 5/449، حدیث:3852)

नानाजान के नाम पर नाम और कुन्यत

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं : मेरा नाम अ़ब्दुल्लाह और कुन्यत अबू बक्र मेरे नानाजान के नाम और कुन्यत पर रखी गई । अलबत्ता आप की एक कुन्यत अबू ख़ुबैब भी है । (مستدرک، 4/709، حدیث:6385) आप के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने आप से फ़रमाया : लोगों में सब से ज़ियादा तुम ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के मुशाबेह (या'नी मिलते जुलते) हो । (الاصابہ، 4/81)

आ़लीशान घराना

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا की अ़ज़मतो शान के क्या कहने ! आप का ख़ानदान बड़ा आ़लीशान है, आप के वालिदे मोह़तरम उन दस ख़ुश नसीब सह़ाबए किराम में से एक हैं जिन को मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़बान से दुन्या में ही जन्नत की ख़ुश ख़बरी अ़त़ा हुई थी या'नी आप अ़शरए मुबश्शरा में से हैं। आप की अम्मीजान ह़ज़रते बीबी अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا भी बड़ी शान वाली हैं क्यूं कि वोह मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की शहज़ादी और मुसल्मानों की अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की बहन हैं ।

अहले बैते अत़्हार की ज़बानी शाने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا

एक मरतबा ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا के पास ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا का ज़िक्रे ख़ैर हुवा तो आप ने फ़रमाया : "ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا इस्लाम में पाकीज़ा ज़िन्दगी के मालिक और क़ुरआने करीम के क़ारी हैं । आप के वालिद

ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ वालिदा ह़ज़रते बीबी अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا, नानाजान अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ, फूफीजान उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا, दादी ह़ज़रते बीबी सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا और ख़ालाजान उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا हैं।''**अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की इन सब पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ख़ालाजान की भान्जे से कुन्यत

मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा आ़बिदा अ़फ़ीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की कुन्यत ''उम्मे अ़ब्दुल्लाह'' है, इस का सबब येह है कि आप ने सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कुन्यत रखने की दरख़्वास्त की, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अपने भान्जे (या'नी अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا) से अपनी कुन्यत रख लो। एक और रिवायत में है आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا जब अपनी बहन के नन्हे मुन्ने शहज़ादे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا को ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुईं तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के मुंह में अपना लुआ़ब शरीफ़ डाल कर फ़रमाया : येह अ़ब्दुल्लाह है और तुम उम्मे अ़ब्दुल्लाह। (مدارج النبوت، 2/468)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इन रिवायात के इ़लावा और अह़ादीसे मुबारका भी हैं जिन से येह पता चलता है कि सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان अपने नौ मौलूद (या'नी पैदाइशी) बच्चों को सब से पहले बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ुसूले बरकत के लिये लाते, घुट्टी दिलवाते और दुआ़ए

बरकत की दरख़्वास्त करते थे क्यूं कि जब **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक नज़र पड़ जाएगी तो बच्चे के सोए बख़्त जाग जाएंगे और रह़मते ख़ुदावन्दी का नुज़ूल होता रहेगा। काश ! ग़म ख़्वार व ग़म गुसार आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम ग़ुलामों पर भी अपनी नज़रे इ़नायत फ़रमा दें, हमारी सोई क़िस्मत भी जगा दें, हमारे वीरान दिलों पर भी एक चश्मे करम फ़रमा दें तो दिल से गुनाहों की सारी कालक दूर हो कर दिल इ़श्क़े नबी से नूरुन अ़ला नूर हो जाएगा। اِنۡ شَآءَ اللّٰہ الۡکَرِیۡم

शहन्शाहे सुख़न मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ अ़र्ज़ करते हैं :

तुम्हारी एक निगाहे करम में सब कुछ है पड़े हुए तो सरे राह गुज़ार हम भी हैं
निगाहे लुत़्फ़ के उम्मीद वार हम भी हैं लिये हुए येह दिले बे क़रार हम भी हैं

(ज़ौक़े ना'त, स. 188)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

नमाज़ में यक्सूई

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا इन्तिहाई ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ नमाज़ अदा फ़रमाया करते थे, एक मरतबा आप नमाज़ पढ़ रहे थे कि क़रीब ही आप का नन्हा मुन्ना प्यारा सा बच्चा मौजूद था, अचानक छत से एक सांप बच्चे के क़रीब गिर पड़ा। लोगों ने "सांप सांप" कह कर शोर मचाया और आख़िर कार उसे मार दिया। इतना कुछ होने के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ इसी त़रह़ नमाज़ पढ़ते रहे। (سیر اعلام النبلاء، 4/464)

سُبۡحٰنَ اللّٰہ ! नमाज़ में इस क़दर ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ आप ही का ह़िस्सा है। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ जब सज्दे में जाते तो इतना लम्बा सज्दा फ़रमाते कि

चिड़ियां आप की पीठ मुबारक को टूटी हुई दीवार का हिस्सा समझ कर उस पर बैठ जाती थीं। (موسوعہ ابنِ ابی الدنیا، 1/341، حدیث:467)

मिन्जनीक़ पथ्थर बरसाती मगर नमाज़ में फ़र्क़ न पड़ता

ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने ह़ज़रते इब्ने अबू मुलैका رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ से फ़रमाया : मुझे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا की ख़ूबियां बयान करो तो आप ने अ़र्ज़ किया : ख़ुदा की क़सम ! मैं ने ऐसा कोई जिस्म नहीं देखा जैसा ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا का जिस्म था, एक दिन वोह नमाज़ के लिये खड़े हुए कि मिन्जनीक़ (जो कि तोप की त़रह़ एक आला होता था जिस से बड़े बड़े पथ्थर फेंके जाते थे,) से चला हुवा एक पथ्थर उन की दाढ़ी और सीने के दरमियान से गुज़रा, ख़ुदा की क़सम ! उन की आंखों में कोई ख़ौफ़ नहीं था, उन की क़िराअत में भी कोई फ़र्क़ न आया और न ही रुकूअ़ में कोई फ़र्क़ आया जिस त़रह़ वोह रुकूअ़ करते थे। (दीनो दुन्या की अनोखी बातें, 1/499)

जैसे कोई लकड़ी हो

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا नमाज़ में खड़े होते तो यूं लगता जैसे कोई लकड़ी है और (आप के इस अन्दाज़ को देख कर) कहा जाता था कि नमाज़ में ख़ुशूअ़ ऐसा होता है। (سنن کبریٰ، 2/398، حدیث: 3522) ह़ज़रते अ़म्र बिन दीनार رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं ने सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से ज़ियादा अच्छे अन्दाज़ से नमाज़ पढ़ते किसी को नहीं देखा और ह़ज़रते अ़त़ा رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ से मरवी है कि जब ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا नमाज़ पढ़ते तो यूं लगता कि वोह उभरी हुई कोई चीज़ है जो ह़रकत नहीं कर रही।

(صفۃ الصفوۃ، 1/388، مصنف عبد الرزاق، 2/172، حدیث:3312)

बे मिसाल सख़ी, नमाज़ी

ह़ज़रते इब्ने अबी मुलैका رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने मुझ से फ़रमाया : "तुम्हारे दिल में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا की इतनी ज़ियादा मह़ब्बत की क्या वज्ह है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : अगर आप उन्हें देख लेते तो उन की त़रह़ **अल्लाह** पाक से मुनाजात करने वाला, उन की त़रह़ नमाज़ पढ़ने वाला, **अल्लाह** पाक की ज़ात के बारे में इस क़दर मज़बूत़ और उन से ज़ियादा सख़ी किसी को न पाते। (مستدرک، 4/711، حدیث:6392)

ख़ुशूअ़ की ता'रीफ़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ में **अल्लाह** पाक की अ़ज़मत पेशे नज़र हो, दुन्या से तवज्जोह हटी हुई हो, नमाज़ में दिल लगा हुवा हो और सुकून से खड़ा रहे, इधर उधर न देखे, अपने जिस्म और कपड़ों के साथ न खेले और कोई अ़बस व बेकार काम न करे। येह नमाज़ का ख़ुशूअ़ है। (تفسیر کبیر، 8/256 ماخوذا، مدارک، ص751، صاوی، 4/1356)

नमाज़ में "ख़ुशूअ़" मुस्तह़ब है

अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : नमाज़ में ख़ुशूअ़ मुस्तह़ब है। (عمدۃ القاری، 4/391، تحت الحدیث:741) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ लिखते हैं : नमाज़ का कमाल, नमाज़ का नूर, नमाज़ की ख़ूबी फ़ह्मो तदब्बुर व ह़ुज़ूरे क़ल्ब (या'नी ख़ुशूअ़) पर है। (फ़तावा रज़विय्या, 6/205) मत़लब येह कि आ'ला दरजे की नमाज़ वोह है जो ख़ुशूअ़ के साथ अदा की जाए।

रिज़्क़ में बरकत और ग़म दूर करने का बेहतरीन वज़ीफ़ा

ह़ज़रते इमाम बुरहानुद्दीन इब्राहीम ज़रनूजी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते

हैं : नमाज़ को ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ अदा करना और इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने में लगे रहना फ़िक्रो ग़म को दूर कर देता है। और रोज़ी में बरकत का मज़बूत़ तरीन ज़रीआ़ येह है कि इन्सान नमाज़ को ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़, ता'दीले अरकान (या'नी अरकाने नमाज़ ठहर ठहर कर अदा करने) का लिह़ाज़ करते हुए और तमाम वाजिबात और सुननो आदाब की पूरी त़रह़ रिआ़यत करते हुए अदा करे। (राहे इ़ल्म, स. 92, 87)

हर इ़बादत से बरतर इ़बादत नमाज़ सारी दौलत से बढ़ कर है दौलत नमाज़
क़ल्बे ग़मगीं का सामाने फ़रह़त नमाज़ है मरीज़ों को पैग़ामे सिह़्ह़त नमाज़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मस्जिद का कबूतर

जन्नती इब्ने जन्नती, सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا की इ़बादात की भी क्या ही बात है ! आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने रातों को तीन ह़िस्सों में तक़्सीम किया हुवा था, एक रात खड़े हो कर इ़बादत करते यहां तक कि सुब्ह़ हो जाती, एक रात रुकूअ़ में गुज़ार देते ह़त्ता कि सुब्ह़ फ़ज्र का वक़्त हो जाता जब कि एक रात ह़ालते सज्दा में यूं गुज़ारते की सुब्ह़ हो जाती। (اُسد الغابہ، 3/245) किसी ने आप की अम्मीजान ह़ज़रते बीबी अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से आप के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया : मेरे बेटे की अक्सर रातें क़ियाम (या'नी इ़बादत) में जब कि दिन रोज़े में कटते थे, इसी वज्ह से उन्हें ह़मामुल मस्जिद (या'नी मस्जिद का कबूतर) कहा जाने लगा। (حلیۃ الاولیاء، 1/411، رقم:1183)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! काश ! सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا की इ़बादात और नमाज़ में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ का हमें भी कोई ज़र्रा नसीब हो जाए, अफ़्सोस ! हमारा

इ़बादत में दिल लगता है न तिलावत में, बस जैसे तैसे नमाज़ पढ़ी और वापस आ गए, हमें नमाज़ में कैसे ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ मिले कि हमारे तो कारोबार के ह़िसाब किताब और दीगर मसरूफ़िय्यात के शेड्यूल भी नमाज़ में बन रहे होते हैं, यक़ीनन नमाज़ पढ़ने से पहले नमाज़ के लिये तय्यारी करनी होगी लिहाज़ा ह़त्तल मक़्दूर ज़ेह्न को दुन्यावी ख़यालात से पाक करने की कोशिश करनी चाहिये, **अल्लाह** पाक हमें दिल लगा कर अपनी इ़बादत करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए और अपनी इ़बादत की लज़्ज़त अ़त़ा करे।

मैं साथ जमाअ़त के पढ़ूं सारी नमाज़ें अल्लाह ! इ़बादत में मेरे दिल को लगा दे
पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 114)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

आस्तानए अ़र्श निशान में बार बार ह़ाज़िरी

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ज़िन्दगी मुबारक के 8 साल चार माह पाए और इस दौरान आप बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर होते रहते थे क्यूं कि आप (एक त़रह़ से) हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आले पाक में से थे लिहाज़ा आप अपनी ख़ालाजान ह़ज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के घर में (ब कसरत) आते जाते रहते थे। मुसल्मानों की अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द अपने वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ और इन के बा'द ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से बढ़ कर किसी से मह़ब्बत न फ़रमाती थीं। (سیر اعلام النبلاء، 4/465-460)

आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ निहायत फ़सीह़ो बलीग़ थे, इसी वज्ह से आप का शुमार क़बीलए क़ुरैश के नुमायां ख़ुत़बा में हुवा करता था। (تاریخ ابن عساکر، 28/179) आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की आवाज़ मुबारक गरज दार और बुलन्द थी, यहां तक कि आप जब ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाते और आवाज़ पहाड़ों से टकरा कर लौटती तो यूं मा'लूम होता पहाड़ एक दूसरे से गुफ़्तगू कर रहे हों। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ दाढ़ी मुबारक में पीला ख़िज़ाब लगाते थे, जब कि ज़ुल्फ़ें कानों से ढलक कर गरदन को छूने लग जाती थीं। (سیر اعلام النبلاء، 4/465)

ज़ुल्फ़ें सजा लीजिये

प्यारे नबी के प्यारे दीवानो ! आप ने देखा ? सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने ज़ुल्फ़ें सजाई हुई थीं क्यूं कि ज़ुल्फ़ें सजाना हमारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बड़ी प्यारी सुन्नत है, हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़ुल्फ़ें कभी आधे कान मुबारक तक, तो कभी कान मुबारक की लौ तक, और बा'ज़ अवक़ात बढ़ जातीं तो मुबारक कन्धों को चूमने लगतीं, हमें चाहिये कि मौक़अ़ ब मौक़अ़ तीनों सुन्नतें अदा करें, या'नी कभी आधे कान तक कभी पूरे कान तक तो कभी कन्धों तक ज़ुल्फ़ें रखें, कन्धों को छूने की ह़द तक ज़ुल्फ़ें बढ़ाने वाली सुन्नत की अदाएगी उ़मूमन नफ़्स पर ज़ियादा भारी होती है मगर ज़िन्दगी में एकआध बार तो हर एक को येह सुन्नत अदा कर लेनी चाहिये, अलबत्ता येह ख़याल रखना ज़रूरी है कि बाल कन्धों से नीचे न होने पाएं, पानी से अच्छी त़रह़ भीग जाने के बा'द ज़ुल्फ़ों की लम्बाई ख़ूब नुमायां हो जाती है लिहाज़ा जिन दिनों बढ़ाएं उन दिनों ग़ुस्ल के बा'द कंघी कर के ग़ौर से देख लिया करें कि बाल कहीं कन्धों से नीचे तो नहीं जा रहे। फ़िल्मी अदाकारों की नक़्क़ाली करने की बजाए हमें **अल्लाह**

पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों पर अ़मल करना चाहिये क्यूं कि सुन्नत में ही अ़ज़मत व नजात है।

सुन्नतों से भाई रिश्ता जोड़ तू नित नए फ़ेशन से मुंह को मोड़ तू

(वसाइले बख़्शिश, स. 715)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

का 'बए मुशर्रफ़ा का त़वाफ़ करने वाली जिन्न औ़रतें

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं एक रात ह़रम शरीफ़ में दाख़िल हुवा तो देखा कि चन्द औ़रतें बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ कर रही हैं। उन्हों ने मुझे तअ़ज्जुब व ह़ैरानी में डाल दिया (क्यूं कि वोह आ़म औ़रतों की त़रह़ नहीं थीं)। जब वोह औ़रतें त़वाफ़ से फ़ारिग़ हुईं तो बाहर निकल गईं। मैं ने दिल में कहा मैं इन के पीछे जाऊं ताकि मैं इन के घर देख लूं। वोह चलती रहीं यहां तक कि एक दुश्वार गुज़ार घाटी में पहुंचीं फिर उस घाटी पर चढ़ गईं। मैं भी उन के पीछे पीछे उस पर चढ़ गया फिर वोह उस से उतरीं तो मैं भी नीचे उतर गया फिर वोह एक वीरान जंगल में दाख़िल हुईं तो मैं भी उन के पीछे दाख़िल हो गया। क्या देखता हूं कि वहां कुछ बड़ी उ़म्र के लोग बैठे हुए हैं, उन्हों ने मुझ से पूछा : "ऐ इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ! आप यहां कैसे आ गए ?" मैं ने जवाब देने के बजाए उन से सुवाल कर दिया : "आप लोग कौन हैं ?" उन्हों ने कहा : "हम जिन्नात हैं।" मैं ने कहा : मैं ने चन्द औ़रतों को बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ करते देखा तो उन्हों ने मुझे तअ़ज्जुब में डाल दिया या'नी वोह मुझे इन्सान के सिवा कोई और मख़्लूक़ मा'लूम हुईं चुनान्चे मैं उन के पीछे चल पड़ा यहां तक कि इस जगह पहुंच गया। उन्हों ने कहा : "येह हमारी औ़रतें (या'नी जिन्नात में से) थीं, ऐ इब्ने ज़ुबैर

رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ! आप क्या पसन्द करेंगे ?" मैं ने कहा : "पकी हुई ताज़ा खजूरें खाने को दिल चाह रहा है।" ह़ालां कि उस वक़्त मक्कए पाक में ताज़ा खजूर का कहीं नामो निशान न था। लेकिन वोह मेरे पास पकी हुई ताज़ा खजूर ले आए। जब मैं खा चुका तो उन्हों ने मुझ से कहा : "जो बाक़ी बच गई हैं इन को आप अपने साथ ले जाएं।" ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने वोह बची हुई खजूरें उठाईं और घर वापस आ गया। (لقط المرجان فی احکام الجان، ص247)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا का शुमार बड़े बहादुर और त़ाक़त वर सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان में से होता है जैसा कि अभी आप ने जिन्नात से मुलाक़ात का वाक़िआ़ पढ़ा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ उन जिन्नात से बिल्कुल नहीं डरे इसी त़रह़ आप ने एक ऐसे बादशाह को क़त्ल किया जिस का गुमान येह था कि वोह अपने ज़माने का सब से बड़ा बहादुर है। (दीनो दुन्या की अनोखी बातें, 1/499)

वोह शेर हैं

ह़ज़रते इब्ने अबी मुलैका رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا मुसल्सल 7 दिन तक रोज़ा रखते इस के बा वुजूद सातवें दिन हम से ज़ियादा त़ाक़त वर होते गोया वोह शेर हैं।

(اخبارِ مکہ للفاکہی، 2/364، رقم:1665)

100 ज़बानों में गुफ़्तगू

ह़ज़रते उ़मर बिन क़ैस رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ से रिवायत है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا के 100 ग़ुलाम थे। हर ग़ुलाम मुख़्तलिफ़ ज़बान में बात करता था और आप भी हर ग़ुलाम से उसी की ज़बान में गुफ़्तगू फ़रमाते थे। (مستدرک، 4/711، حدیث:6391)

ह़ज का ख़ुत़्बा

मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ बयान करते हैं : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने ह़ज के मौक़अ़ पर ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमाया, मैं भी उस ख़ुत़्बे में मौजूद था। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ 8 ज़ुल ह़िज्जा से एक दिन पहले एह़राम की ह़ालत में हमारे पास तशरीफ़ लाए और इतने ख़ूब सूरत अन्दाज़ में तल्बिया (या'नी لَبَّیۡکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیۡکَ لَبَّیۡکَ لَا شَرِیۡکَ لَکَ لَبَّیۡکَ اِنَّ الۡحَمۡدَ وَ النِّعۡمَۃَ لَکَ وَ الۡمُلۡکَ لَا شَرِیۡکَ لَکَ) पढ़ा कि मैं ने इस जैसा तल्बिया कभी नहीं सुना था। फिर आप ने **अल्लाह** पाक की ह़म्दो सना (या'नी ता'रीफ़) बयान की और फ़रमाया : "बेशक तुम लोग मुख़्तलिफ़ मक़ामात से वुफ़ूद (Groups) की ह़ालत में बैतुल्लाह की त़रफ़ आए हो। **अल्लाह** पाक के ज़िम्मए करम पर है कि वोह अपने वुफ़ूद का इक्राम करे। लिहाज़ा जो **अल्लाह** पाक से ख़ैर व भलाई त़लब करने आया है तो वोह जान ले कि **अल्लाह** पाक का त़ालिब ना मुराद नहीं लौटता। तुम अपने अक़्वाल की अफ़्आ़ल से तस्दीक़ करो क्यूं कि क़ौल का अस्ल सरचश्मा फ़े'ल और निय्यत है दिल की निय्यत ही ह़क़ीक़त है। (या'नी तुम जो कहते हो उस पर अ़मल भी करो क्यूं कि अ़मल और निय्यत ही अस्ल बात है) तुम इन दिनों (या'नी ह़ज के दिनों) में **अल्लाह** पाक का ख़ूब ज़िक्र करो कि इन दिनों में गुनाह बख़्शे जाते हैं। तुम लोग मुख़्तलिफ़ मक़ामात से आए हो और तुम्हारे आने का मक़्सद तिजारत (Bussiness) करना, माल कमाना या दुन्या ह़ासिल करना नहीं है।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने तल्बिया पढ़ा तो लोगों ने भी आप के साथ तल्बिया पढ़ा और मैं ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا को उस दिन से ज़ियादा किसी दिन रोते नहीं देखा। (مجمع الزوائد، 3/555، حدیث:5535)

या इलाही ह़ज करूं तेरी रिज़ा के वासित़े कर क़बूल इस को मुह़म्मद मुस्त़फ़ा के वासित़े

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

का'बे शरीफ़ पर रेशमी ग़िलाफ़

ख़ानए का'बा शरीफ़ पर सब से पहले रेशमी ग़िलाफ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने ता'ज़ीमे का'बा की ख़ातिर चढ़ाया। इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ का'बतुल्लाह शरीफ़ को ख़ूब ख़ुश्बू लगाते यहां तक कि ह़रम के अत़राफ़ मुअ़त्त़रो मुअ़म्बर हो जाया करते थे। (سیر اعلام النبلاء، 4/467)

(ख़ानए का'बा और ग़िलाफ़े का'बा वग़ैरा पर अब भी लोग काफ़ी ख़ुश्बू लगाते हैं लिहाज़ा एह़राम की ह़ालत में ख़ानए का'बा और ग़िलाफ़े का'बा को छूने से एह़तियात़ कीजिये नीज़ ह़ज व उ़म्रे के मसाइल जानने के लिये अमीरे अहले सुन्नत की किताब रफ़ीकुल मो'तमिरीन और रफ़ीकुल ह़रमैन ज़रूर पढ़िये।)

तैरते हुए त़वाफ़ मुकम्मल किया

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا **अल्लाह** पाक को राज़ी करने के लिये इ़बादत का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने देते थे यहां तक कि दीगर लोग आ़जिज़ आ जाते चुनान्चे एक मरतबा मक्कए पाक में घन्घोर घटा छाई और ख़ूब बारिश बरसी, पहाड़ों से बरसाती नाला बहता हुवा बैतुल्लाह शरीफ़ के आस पास जम्अ़ हो गया, यहां तक कि लोगों के लिये चलना फिरना और त़वाफ़ करना मुश्किल हो गया। उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने तैरना शुरूअ़ कर दिया और तैरते हुए अपना त़वाफ़ मुकम्मल किया। (موسوعہ ابن ابی الدنیا، 8/423)

दे दे त़वाफ़े ख़ानए का 'बा का फिर शरफ़ फ़रमा येह पूरा मुद्दआ़ या रब्बे मुस्त़फ़ा

ह़दीसे पाक की रिवायत

ह़ज़रते अ़ब्बास बिन सह्ल बिन सा'द अन्सारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِ बयान करते हैं : मैं ने सुना कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने मक्कए पाक के मिम्बर शरीफ़ पर ख़ुत़्बा देते हुए फ़रमाया : ऐ लोगो ! बेशक हुज़ूरे

पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर इन्सान के पास सोने की एक वादी हो तो दूसरी की तमन्ना करेगा और अगर दूसरी मिल जाए तो तीसरी का त़लब गार रहेगा और इन्सान का पेट (क़ब्र की) मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भर सकती और जो तौबा करे **अल्लाह** पाक उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है।" (بخاری،4/229،حدیث:6438)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुन्या का माल सरासर वबाल है, मालदार लोग दुन्या में भी त़रह़ त़रह़ की आज़्माइशों में मुब्तला होते हैं, कभी दुश्मन का ख़त़रा तो कभी जान चली जाने का ख़ौफ़, कभी बाल बच्चों के इग़वा का डर तो कभी टेक्सिज़ के केसिज़, माल की कसरत की त़लब की बजाए हुस्ने आ'माल की कसरत हो जाए तो क्या बात है क्यूं कि क़ब्र में सिर्फ़ नेक आ'माल ही काम आएंगे बाक़ी बेंक बेलेन्स, सोने चांदी के ज़ेवरात, कारोबार, नई गाड़ियां, बेहतरीन लिबास वग़ैरा सब यहीं के यहीं रह जाएंगे, काश ! माल से दिल लगाने के बजाए रब्बे ज़ुल जलाल की याद दिल में बस जाए फिर तो اِنۡ شَآءَ اللّٰہُ الۡکَرِیۡم अपना बेड़ा ही पार है।

ताजो तख़्तो हुकूमत मत दे कसरते मालो दौलत मत दे
अपनी रिज़ा का दे दे मुज़्दा या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 123)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ह़दीसे पाक बयान करते हुए ख़ौफ़

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने अपने वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से अ़र्ज़ किया : अब्बाजान ! मैं आप को उस त़रह़ कसरत से ह़दीसें सुनाते हुए नहीं देखता जिस त़रह़ फ़ुलां फ़ुलां सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ह़दीसें सुनाया करते हैं तो ह़ज़रते ज़ुबैर

बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने फ़रमाया कि मैं कभी किसी मौक़अ़ पर भी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जुदा तो नहीं हुवा मगर मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना है कि जो मुझ पर झूट बोले वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले। (بخاری، 1/57، حدیث:107, मुन्तख़ब ह़दीसें, स. 111)

शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ का मत़लब येह था कि मैं इस वईद के ख़ौफ़ से ह़दीसों को बयान करने में बहुत एह़तियात़ करता हूं और सिर्फ़ उन्ही ह़दीसों को सुनाता हूं जो मुझे अच्छी त़रह़ याद हैं और जिन के बारे में पूरे वुसूक़ (या'नी ए'तिमाद) और यक़ीन के साथ मैं जानता हूं कि येह फ़रमाने रसूल हैं। बाक़ी दूसरे सह़ाबा जो मुझ से ज़ियादा ह़दीसें बयान करते हैं चूंकि वोह मुझ से ज़ियादा ह़दीसों को याद किये हुए हैं इस लिये वोह मुझ से ज़ियादा ता'दाद में ह़दीसें सुनाया करते हैं। (मुन्तख़ब ह़दीसें, स. 111)

शहादत का वाक़िआ़

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا सच बोलने वाले, ह़क़ की ख़ात़िर लड़ने वाले और बे मिसाल तल्वार चलाने वाले थे, चुनान्चे यज़ीदे पलीद ने जब आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से बैअ़त लेनी चाही तो आप ने उस के ख़त़ को फेंक दिया और फ़रमाया : मैं नाह़क़ मुत़ालबे को पूरा करने के लिये मा'मूली नरमी भी इख़्तियार नहीं करूंगा। 64 हिजरी में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने ख़िलाफ़त का ए'लान फ़रमाया, 73 हिजरी में अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने इक़्तिदार संभाल कर अपनी बैअ़त का ए'लान किया और बनू उमय्या के ज़ालिम गवर्नर ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ को एक लश्कर का अमीर मुक़र्रर कर के मक्कए पाक की जानिब रवाना किया। बद बख़्त ह़ज्जाज ने "अबू क़ुबैस" पहाड़ पर चढ़ कर मिन्जनीक़ (पथ्थर

फेंकने वाली तोप) के ज़रीए आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ और आप के अस्ह़ाब पर पथ्थर बरसाए। हिम्मतो क़ुव्वत वाले सह़ाबिये रसूल رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने उस ज़ालिम की फ़ौजों का ख़ूब डट कर मुक़ाबला किया। एक पथ्थर आप के मुबारक सर पर आ कर लगा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। दुश्मन ने आगे बढ़ कर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को बड़ी बे दर्दी के साथ शहीद कर दिया। (حلیۃ الاولیاء، 1/407-408، رقم:1170)

साबिरा व शाकिरा मां

जन्नती सह़ाबिया ह़ज़रते बीबी अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं : मैं ने प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना कि "बेशक क़बीलए सक़ीफ़ में एक बहुत बड़ा ज़ालिम होगा।"

(معجم کبیر، 24/100، حدیث:271، مستدرک علی الصحیحین، 4/716، حدیث:6397)

इमाम शरफ़ुद्दीन नववी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ लिखते हैं : उ़लमाए किराम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِم का इस बात पर इज्माअ़ (या'नी इत्तिफ़ाक़) है कि ह़दीसे मुबारका में ज़ालिम से मुराद ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ है। (شرح مسلم للنووی، 8/100، ج:16)

साबिरा व शाकिरा मां को जब अपने शहज़ादे की शहादत की ख़बर मिली तो रिज़ाए मौला पर राज़ी रहते हुए फ़रमाया : मैं चाहती हूं कि मुझे उस वक़्त तक मौत न आए जब तक अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को मेरे ह़वाले न कर दिया जाए। उन्हें ग़ुस्ल दिया जाए। ख़ुश्बू लगा कर कफ़न पहनाया जाए और फिर दफ़्न कर दिया जाए। कुछ ही देर बा'द अ़ब्दुल मलिक का ख़त़ आया कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की मुबारक मय्यित उन के घर वालों के ह़वाले कर दी जाए। उन्हें ह़ज़रते बीबी अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के पास लाया गया फिर ग़ुस्ल दे कर पाको साफ़ कर के ख़ुश्बू लगा कर दफ़्न कर दिया गया। (مصنف ابن ابی شیبۃ، 16/122، حدیث:31318) ह़ज़रते

अय्यूब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ बयान करते हैं : मेरा ख़याल है कि ह़ज़रते बीबी अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को दफ़्नाने के बा'द सिर्फ़ तीन दिन ज़िन्दा रहीं । (حلیۃ الاولیاء، 2/68، حدیث:1503) एक क़ौल के मुत़ाबिक़ मक्कए पाक के क़ब्रिस्तान में मां बेटे दोनों की मुबारक क़ब्रें एक दूसरे के बराबर बनी हुई हैं । (जन्नती ज़ेवर, स. 528)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

सह़ाबा का गदा हूं और अहले बैत का ख़ादिम येह सब है आप ही की तो इ़नायत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 330)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

फ़ेहरिस

पहला मुहाजिर बच्चा..... 1
नानाजान के नाम पर नाम और कुन्यत... 3
आ़लीशान घराना.....3
शाने अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर
ब ज़बाने अहले बैत..... 3
ख़ालाजान की भान्जे से कुन्यत.....4
नमाज़ में यक्सूई.....5
मिन्जनीक़ पथ्थर बरसाती मगर
नमाज़ में फ़र्क़ न पड़ता.....6
जैसे कोई लकड़ी हो.....6
बे मिसाल सख़ी, नमाज़ी.....7
ख़ुशूअ़ की ता'रीफ़.....7
रिज़्क़ में बरकत और
ग़म दूर करने का बेहतरीन वज़ीफ़ा.....7
मस्जिद का कबूतर.....8
का'बए मुशर्रफ़ा का
त़वाफ़ करने वाली जिन्न औ़रतें.....11
100 ज़बानों में गुफ़्तगू.....12
ह़ज का ख़ुत़्बा.....13
का'बे शरीफ़ पर रेशमी ग़िलाफ़.....14
तैरते हुए त़वाफ़ मुकम्मल किया.....14
ह़दीसे पाक बयान करते हुए ख़ौफ़.....15
शहादत का वाक़िआ़.....16
साबिरा व शाकिरा मां.....17

बे मिसाल सख़ी, नमाज़ी

ह़ज़रते इब्ने अबी मुलैका رحمۃ اللہ علیہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رحمۃ اللہ علیہ ने मुझ से फ़रमाया : "तुम्हारे दिल में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رضی اللہ عنہما की इतनी ज़ियादा मह़ब्बत की क्या वज्ह है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : अगर आप उन्हें देख लेते तो उन की त़रह **अल्लाह** पाक से मुनाजात करने वाला, उन की त़रह नमाज़ पढ़ने वाला, **अल्लाह** पाक की ज़ात के बारे में इस क़दर मज़बूत़ और उन से ज़ियादा सख़ी किसी को न पाते ।

(مستدرک، 4/711، حدیث:6392)